डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

ध्वनि एवं ध्वनियों का वर्गीकरण

- भाषा में उच्चारण की सबसे भौतिक ईकाइ 'स्वन' है जिसे ध्वनि के रूप में देखा और विश्लेषित किया जा सकता है।
- इसकी अवधारणा भाषा निरपेक्ष होती है। स्वनियों का उच्चरित रूप स्वन कहलात है। अर्थात जब स्वनिम उच्चरित होते हैं तो वही स्वन कहलाते है।
- ध्वनि शब्द ध्वन धातु के साथ ईण 'ई' प्रत्यय जोड़ने से बनता है इसका अर्थ है आवाज।

  मानव जब बोलता है उसके मुख विवर से वायु निकलती है जो वागेन्द्रिय के द्वारा कुछ वाणी प्रकट करती है। उसी को स्वन अथवा ध्वनि कहा जाता है। स्वन भाषा का मूल आधार है। और स्वन चिन्हो के समूह का नाम भाषा है। स्वन अथवा ध्वनि ही वाणी, वाक, बोली आदि के रूप में व्यक्त होती है।
- व्यक्ति के मुख में विविध प्रकार की ध्वनियों के उत्पन्न करने की क्षमता होती है। ये विविध ध्वनियॉ मुख से निःसृत होने के कारण विविध प्रकार की होती है परन्तु भाषा विज्ञान के अन्तर्गत हम संगीत या अन्य पशु–पक्षियों की ध्वनियों का अध्ययन नहीं करते अपितु केवल अ ध्वनियों का वर्णन करते है जिनका सम्बन्ध भाषा से होता हैं। उन्ही ध्वनियों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि उन निःसृत ध्वनियों के वर्गीकरण के मूल आधार क्या है। उन आधारों पर ध्वनियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है।

• वर्गीकरण के आधार

1 स्थान

2 प्रयत्न

3 इन्द्रिय या करण

- स्थान के आधार पर – मुख्यता 8 स्थान ऐसे हैं जो ध्वनियों के उच्चारण की दृष्टी से अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

1 काकल

2 कण्ठ

3 तालव्य

4 मूर्धन्य

5 वर्त्स

6 दॉत

7 ओष्ठ

8 जिह्वा

- प्रयत्न के आधार पर – मुख विविर के भीतर ओष्ठ से लेकर कण्ठष्य तक ध्वनिया तथा कंठ्य के नीचे ध्वनि उच्चारण में प्रत्येक व्यक्ति प्रयास करता है उसे प्रयत्न कहते हैं यहॉ दो भेद होते है।

  1 आभ्यन्तर प्रयत्न

  2 वाह्य प्रयत्न

आभ्यन्तर के 5 भेद होते हैं।

1. स्पृष्ट
2. ईषत्स्पृष्ट
3. ईषद विवृत्ति
4. विवृत
5. संवृत

वाह्य प्रयत्न के 11 भेद–

- विवार
- संवार
- श्वांस

- नाद
- घोष
- अघोष
- अत्पप्राण
- महाप्राण
- उदान्त
- अनुदान्त
- स्वरित

करण के आधार पर – मुख विवर में स्थित उन इन्द्रियों को करण कहते हैं जो शतत गतिशील रहकर ध्वनियों के उच्चारण में सहायता पहुॅचाया करती हैं स्थान और करण में अन्तर ही यह है कि स्थान तो स्थिर एवं चल होती है।

इस दृष्टि से अधरोष्ठ, जिह्वा, कोमल ताल, स्वर तन्त्री को करण कहा जा सकता है।

ध्वनि भेद–

ध्वनियों के दो भेद माने जाते हैं

- स्वर
- व्यंजन
- स्वर –जिस ध्वनि का उच्चारण स्वयं किया जाता है, उसे स्वर कहते हैं ।

अर्थात

‘‘स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चाण में हवा अवाध गति से मुख विवर से निकल जाती है।’’

स्वरों का उच्चारण स्वतन्त्र रूप से किया जाता है।

स्वर 11 माने जाते हैं

(अ) स्वरों का वर्गीकरण –

1. स्थान के आधार पर –
1. कण्ठ्य– जिस स्वर का उच्चारण कण्ठ से होता है। कण्ठ्य स्वर कहते हैं। जैसे 'अ'
2. तालव्य – तालु से उच्चारित होने वाले स्वर
3. मूर्धन्य – जिस स्वर का उच्चारण मूर्धा से होता है, उसे मूर्धन्य स्वर कहते हैं जैसे 'ऋ'
4. दन्त्य – जिस स्वर का उच्चारण दन्त की सहायता से होता है, दन्त्य स्वर कहते हैं।
5. ओष्ठ्य – जिस स्वर का उच्चारण ओष्ठ से होता है, उसे 'ओष्ठ्य स्वर' कहते हैं। जैसे 'उ'
6. अनुनासिक – जिस स्वर का उच्चारण नासिका से होता है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं। जैसे अं
7. कण्ठतालव्य – जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ और ताल दोनों स्थानों से एक साथ होता है उन्हे कण्ठतालव्य स्वर कहते हैं। जैसे ए, ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य – जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ, ओष्ठ दोनों से एक साथ होता है, उन्हे कण्ठोष्ठ्य स्वर कहते हैं। जैसे ओ, औ
9. दन्त्योठ्य – जिन स्वरों का उच्चारण दन्त तथा ओष्ठ से एक साथ होता है उसे दन्त्योठ्य कहते हैं जैसे व

प्रयत्न के आधार पर

1. जिह्वा की अवस्था के आधार पर
2. ओष्ठों की स्थिति के आधार पर
3. कण्ठ की मांसपेशियों की शिथिलता के आधार पर

जिह्वा की अवस्था के आधार पर जिह्वा की आड़ी स्थिति –

1. अग्र स्वर – प्रायः स्वरों का उच्चारण करते समय जिह्वा की स्थिति त्रिभुजाकार हो जाती है। वह आगे की ओर उॅची, पीछे की ओर उॅची और बीच में नीची हो जाती है ऐसी अवस्था में जिस स्वर के उच्चारण करने में जिह्वा स्वर त्रिकोण की बॉयी ओर पड़े वह अग्र स्वर कहलाता है।
2. पश्च स्वर –जिस स्वर के उच्चराण में जिह्वा स्वर त्रिकोण के दाहिनी ओर पड़े वह पश्च स्वर कहलाता है। जैसे उ ऊ
3. मध्य स्वर – जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा उस स्वर त्रिकोण के अन्दर पड़े, उसे मध्य स्वर कहते हैं। जैसे अ आ

जिह्वा की पड़ी स्थिति –

1. संवृत – जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा बिना किसी प्रकार की रगड़ खाये पर्याप्त ऊॅची उठ जाती हैं, उस स्वर को संवृत अर्थात बंद स्वर कहते हैं। जैसे ऊपर शब्द में ऊ संवृत स्वर है।
2. अर्धसंवृत – जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के उपरी भाग की दूरी संवृत स्वर की अपेक्षा अधिक होती है, उसे अर्धसंवृत कहा जाता है। जैसे – अनेक, देख आदि शब्दों में।
3. विवत – जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा अधिक स अधिक नीचे आ जाती है जिह्वा तथा मुख विवर के उपरी भाग के मध्य में अधिक से अधिक दूरी हो जाती है, उसे विवृत स्वर कहते हैं। जैसे– आम, आग
4. अर्धविवृत – जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के उपरी भाग की दूरी विवृत स्वर की अपेक्षा कम हो जाती है, उसे अर्धविवृत स्वर कहते हैं। जैसे – बोतल, कोट

ओष्ठों की स्थिति –

1. वृत्ताकार स्वर – जिस स्वर के उच्चारण में ओठों की स्थिति वृत्ताकार हो जाती हैं उसे वृत्ताकार स्वर कहते हैं जैसे ऊ वृत्ताकार स्वर है।

2. अर्द्धवृत्ताकार स्वर – जिस स्वर के उच्चारण में ओष्ठों की आकृति पूर्णतया वृत्ताकार न होकर अर्द्धवृत्ताकार हो हो जाती है, उसे अर्द्धवृत्ताकार स्वर कहते हैं जैसे आ अर्द्धवृत्ताकार स्वर है।
3. अवृत्ताकार स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ स्वाभाविक रूप से खुले रहते हैं अथवा वृत्ताकार, अर्द्धवृत्ताकार नहीं होती हैं, उन्हे अवृत्ताकार स्वर कहे हैं जैसे– इ, ई, ए, ऐ

कण्ठ की मांसपेशियों की स्थिति –

1. दृढ़ स्वर – जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ–पिटक और चिबुक के बीच में हमारे कण्ठ की मांसपेशिया दृढ़ हो जाी हैं जैसे दीर्घ ई और उ दृढ़ स्वर होते हैं।
2. शिथिल स्वर – जिन स्वरों के उच्चरारण में कण्ठ पीटक चिबुक के बीच कण्ठ की मांस पेशियों में तनाव नहीं होता अपितु वे शिथिल रह जाती है शिथिल स्वर कहते हैं। इ, उ

(ब) व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजन वे भाषिक ध्वनियॉ है जिनके उच्चारण में मुख विवर में विकार उत्पन्न होता है। अर्थात उनके उच्चारण में मुख विवर में वायु प्रवाह को कहीं न कहीं बाधित होती हैं प्रायः व्यंज्जनों का स्वतन्त्र रूप से उच्चारण नहीं किया जाता। कोई न कोई व्यन्ज स्वर की सहायता के साथ ही उच्चरित होते हैं।

1. स्थान के आधार पर
2. प्रयत्न के आधार पर

(क) स्थान के आधार पर

1. कांकल्य – जिस व्यंज्जन का उच्चारण काकल स्थान से होता है, उसे कांकल्य व्यंज्जन कहते हैं इसके उच्चारण में मुख विवर खुला

रहता है। और निःस्वास बन्द कण्ठ द्वार झटके के साथ खोलकर बाहर निकल पड़ता है। जैसे ह अंग्रेजी का h कांकल्य व्यंज्जन है।

2. कण्ठ्य – जिस व्यंज्जन का उच्चारण कण्ठ स्थान से होता है, उसे कण्ठ्य व्यंज्जन कहते हैं। इसके उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग कोमल तालु का स्पर्श किया करता है। जैसे क, ख, ग, घ कण्ठ्य व्यंज्जन होते हैं।
3. तालव्य – इसके उच्चारण में जिह्वाम कठोर ताल का स्पर्श किया करता है। जैसे च, छ, ज, ञ, श तालव्य व्यंजन हैं।
4. मूर्धन्य – जिस व्यंजन का उच्चारण मूर्धा से होता है उसे मूर्धन्य व्यंज्जन कहते है। इसके उच्चारण में तालु के पिछले भाग अर्थात मूर्धा स्पर्श किया करती है। जैसे ट, ठ, ड, ढ मूर्धन्य व्यंज्जन है।
5. वर्त्स्य – जिस व्यंज्जन का उच्चारण वर्त्स्य से होता है उसें वर्त्स्य व्यंज्जन कहते हैं उसके उच्चारण में जिह्वानीक तालु के अंतिम भाग एवं उपरी मसूड़ों का किया करती।
6. दन्त्य – जिन व्यंज्जनों का उच्चारण दंत पंक्ति से होता है उन्हे दन्त्य व्यंज्जन कहते हैं। उनके उच्चारण जिह्वा की नोक उपर की दन्त पंक्ति का स्पर्श किया करती हैं। जैसे त, थ, द, ध, न
7. ओष्ठ्य – इनके उच्चारण में ओष्ठों का एक दूसरे से स्पष्ट होता है जैसे जिह्वा मुख विवर में सरल निश्चेष्ट पड़ी रहती है। जैसे प, फ, ब, भ, म आदि।
8. दन्त्योष्ठय – जिन व्यंज्जनों का उच्चारण दन्त और ओष्ठ दोनों से होता है, उन्हे दन्त्योष्ठय व्यंज्जन कहते हैं इनके उच्चारण में दोनों ओष्ठों का परस्पर पूरा स्पर्श नहीं होता और जिह्वा का अग्र भाग कुछ उपर उठता है परन्तु दन्त्य, व्यंज्जनों के समान दांतो का स्पर्श नहीं करता जैसे व फारसी की फ स्वन और अंग्रेजी f स्वरें भी दन्त्योष्ठय मानी जाती है।

9. जिह्वामूलीय – जिन व्यंज्जनों का उच्चारण जिह्वा के मूल से होता है उन्हे जिह्वामूलीय व्यंज्जन कहते हैं। जैसे क, ख, ग आदि।

(ख) प्रयत्न के आधार पर

प्रयत्न के मुख्यतया दो भेद हाते हैं।

1. आभ्यन्तर
2. वाह्य

अभ्यंतर के आधार पर व्यंज्जनों के आठ भेद होते हैं

1. स्पर्श – जिन व्यंज्जनों के उच्चारण अवयवों का पूर्णतया कम होता है अर्थात जिनके उच्चारण में जिह्वा कण्ठ से लेकर ओष्ठ से सभी स्थानों पर स्पष्ट किया करती हैं उन्हे स्पर्श व्यंज्जन कहते हैं क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, प वर्ग के सभी व्यंजन स्पर्ष व्यंजन कहलाते हैं।
2. स्पर्श संघर्षी – जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्पर्श के साथ–साथ निःस्वास के निकलने में हल्का सा संघर्षण भी होता है। उन्हे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
3. संघर्षी – जिन व्यजनों के उच्चारण में वायु मार्ग किसी एक स्थान पर इतना अधिक संकीर्ण हो जाता है कि निःस्वास रगड़ खाकर बाहर निकलती है और उसमें बाहर निकलनें पर सर्प की सीत्कार जैसी उष्म ध्वनि होती है उन्हे संर्घषी व्यंजन कीते हैं। जैसे स, श, ष, ज आदि संघर्षी व्यंजन हैं।
4. पार्श्विक – जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक मूर्धा का स्पर्श करती है। और निःस्वास वायु जिह्वा के अगल–बगल से बाहर निकलती है, उन्हे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। जैसे ल पार्श्विक व्यंजन है।
5. लुण्ठित – जिन व्यंजनों की स्थिति में जिह्वा बेलन की तरह लपेट खाकर तालु का स्पर्श करती है। और जिह्वा की नोक वर्त्स पर

बार–बार ठोकर मारती है, वे लुण्ठित कहलाते हैं जैसे र ऱ व्यंजन लुण्ठित हैं।

6. उत्क्षिप्त – जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा तालु के किसी भाग को झटके से छूकर हट जाती है, उन्हे उत्क्षिप्त व्यंजनें कहते हैं जैसे ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन होते हैं
7. अंतस्थ या अर्धस्वर – कुछ व्यंजन ऐसे होते हैं जो कभी स्वर की तरह और कभी व्यंजन की तरह बोले जाते हैं। जैसे य और व अर्धस्वर कीलाते हैं।
8. अनुनासिक – जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःस्वास वायु, मुख–विवर के साथ–साथ नासिका विवर से भी निकला करती हैं। उन्हे अनुनासिक व्यंजन कहते हैं। जैसे ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक व्यंजन हाते हैं।

वाह्य प्रयत्न के आधर पर –

व्यंजनों के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं

1. विवर – जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर–तन्त्रियॉ पूर्णतया खुली रहती हैं, उन्हे विवर कहते हैं।
2. संवार – जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियॉ बन्द हो जाती हैं उन्हें संवार कहते हैं जैसे ग, ब, द, ज आदि।
3. स्वास – प्रश्वास की क्रिया अबाध रूप से चलती रहती है, उन्हे स्वास व्यंजन कहते हैं। जैसे छ, फ, ठ आदि।
4. नाद – जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों के अन्तर्गत कम्पन होता है, उन्हे नाद कहते हैं। जैसे म, ण, न आदि।
5. अघोष – प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितिय व्यंजन को अघोष व्यंजन कहते हैं। जैसे क,ख च,छ आदि।
6. घोष – प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम व्यंजन को घोष व्यंजन कहते हैं। जैसे ग, घ, ङ, ज, झ, ञ ड आदि।

7. अल्पप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःश्वास वायु का कम प्रयोग होता है उन्हे अल्पप्राण कहते है। हिन्दी में प्रत्येक वर्ग के पहला, तीसरा व पाचवाँ व्यंजन क, ग, ङ।
8. महाप्राण – जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःस्वास–वायु का अधिक प्रयोग होता है, उन्हे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। अंग्रेज के अक्षर में h जोड़कर महाप्राण व्यंजन बनाये जाते हैं। जैसे k+h (ख) g+h (घ) आदि।

   प्रत्येक वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन महाप्राण होते हैं जैसे ख, घ, छ, फ, म आदि।

क्लिक ध्वनियॉ–

प्रायः ध्वनियों के उच्चारण में निःस्वास वायु मुख विवर से बाहर निकला करती हैं। परन्तु संसार में कुछ ऐसी भाषाएॅ हैं। जिनका ध्वनियों के उच्चारण में निःस्वास वायु के भीतर की ओर खींचा जाता है। इन्ही ध्वनियों को क्लिक ध्वनियों को क्लिक ध्वनियॉ कहते हैं।